ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 60-63

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

मध्यकालीन भारत में शिक्षा व्यवस्था की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन

1. अफसर अली 2. सुधांशु सिन्हा

1. शोध अध्येता, 2. एसो0 प्रोफे0, शिक्षक–शिक्षा विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received- 30.11.2019, Revised- 02.12.2019, Accepted - 05.12.2019 E-mail: aliafsar705248@gmail.com

सारांश : *शिक्षा एक ऐसा साधन है, जो सामाजिक परिवर्तन लाकर राष्ट्रीय उन्नति में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है भारत वर्ष अतीत काल से ही अपनी सांस्कृतिक धरोहर ,साहित्यिक सृजन ,शैक्षिक क्रियाकलापों तथा आर्थिक समृधी के लिए विश्वविख्यात रहा है भारतीय शिक्षा के इतिहास को मुख्य रूप से 5 कालों विभाजीत किया गया है –वैदिक काल ,बौद्ध काल ,मुस्लिम काल ,ब्रिटिश काल तथा स्वतंत्रता काल मध्यकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था को 2 कालों में बांटा गया–प्रारंभिक मध्युगीन काल 8–11 शताब्दी, उत्तर मध्य काल 12–18 शताब्दी,प्रारंभिक आधुनिक काल को, मुगल काल के नामों से भी जाना जाता है।*

कुंजी शब्द – समाजिक परिवर्तन, राष्ट्रीय उन्नति, सार्थक भूमिका, सास्कृतिक धरोहर, साहित्यिक सृजन।

मुहम्मद गोरी भारत का प्रथम मुस्लिम शासक बना, उसके बाद कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुत्मिस, रजिया बेगम, गयासुद्दीन बलबन, गयासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद तुगलक, फिरोज शाह तुगलक ,बहलोल लोदी ,सिक्कंदर लोदी एव इब्राहीम लोदी आदि शासकों ने शासन किया। 1526 से बाबर के आधिपत्य के फलस्वरूप मुगल साम्राज्य में बाबर के बाद हुमायु, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगजेब आदि बादशाहों ने शासन की बागडोर संभाली प्रायः सभी मुस्लिम शासक शिक्षित थे सभी ने विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया स्वतंत भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति के पद पर आसीन मुस्लिम राष्ट्रपति डाक्टर जाकिर हुसैन ,अहमद फखरूद्दीन एवं मिशाईलमैन के नाम से विख्यात डाक्टर ए. पी.जे. अब्दुल कलम एवं उप राष्ट्रपति हामिद अंसारी आदि का नाम उल्लेखनीय है। एक अल्लाह ईश्वर, में यकीन रखना इस्लाम है। इस्लाम शब्द का शाब्दिक अर्थ है–आत्मसमर्पण या सुरक्षा। इस्लाम मानव जाति के लिए रहम या करुणा बनकर आया तथा इस धर्म की पवित्र पुस्तक कुरान है। मुस्लिम कालीन शिक्षा व्यवस्था दो रूपों में दी जाती थी .मकतब तथा मदरसाह। मुस्लिम शिक्षा की विशेषताएँ– धर्म, संस्कृति, ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना एवं संसारिक एश्वर्य की प्राप्ति, उच्च शिक्षा का माध्यम अरबी फारसी, पाठ्यक्रम–लौकिक एवं धार्मिक, शिक्षक मुदर्रिस असतजा, छात्र शागिर्द तालिबे ए इल्म, शिक्षण विधि ,उद्देस आदि का अध्ययन किया गया और पाया गया की इस काल में जो भी विशेषताएँ देखने को मिली है,वो आज भी प्रासंगिक प्रतीत होती है।

प्रस्तावना –Education is the modification of behavior

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है, इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों ,ज्ञान और कौशलों में विकास तथा व्यवहार में परिवर्तन कर उसे योग्य, कर्मठ एवं प्रयत्नशील नागरिक बनाया जाता है।

भारतीय समाज में शिक्षा को सदैव ही अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय शिक्षा के इतिहास को मुख्य रूप से ५ कालखंडो में VIBHAJEIT विभाजित किया गया है ,यह विभाजन केवल अध्ययन के सुविधा के द्रष्टि से किया गया है। प्रथम कालखंड–वैदिक काल 600 ईसापूर्व,–इस काल में वेदों की रचना तथा वेदों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था का काल है।

द्वितीय कालखंड–बौद्ध काल 600 ईसापूर्व –1200 शताब्दि,–इस काल में बौद्धधर्म का उद्दभव हुआ तथा बौद्ध धर्म के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था की गयी थी।

तृतीय कालखंड–मुस्लिम काल 1200 शताब्दि–1800 शताब्दि,–इस काल को मध्यकाल भी कहा जाता है तथा इस काल में भारत वर्ष के उपर मुस्लिम शासकों ने शासन किया तथा मुस्लिम धर्म व संस्कृति के आधार पर दी जाने वाली शिक्षा व्यवस्था का बोलबाला रहा।

चतुर्थ कालखंड–ब्रिटिश काल 1800 शताब्दि– सन् 1947, –इस अवधि में भारत का शासन मुख्यतः ईस्ट इंडिया कंपनी तथा ब्रिटेन की राज्य व्यवस्था के अधिकार में रहा।

पंचम कालखंड .स्वंत्रता काल 1947 के बाद– दासता के बेडियों को तोड़ते हुए भारत ने सन् 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की तथा इसके उपरांत स्वतन्त्र भारत की नवीन परिस्थितियों तथा स्वतंत्र रास्त्र की आकांक्षाओं व आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में अनेकानेक परिवर्तन किये गए।

मध्यकालीन भारत में शिक्षा व्यवस्था–मध्युगीन भारत प्राचीन भारत और आधुनिक भारत के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की लम्बी अवधि को दर्शाता है। इस काल की अवधि 8वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी मानी

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

जाती है, जिसमे प्रारंभिक मध्युगीन काल 8वी –11वी शताब्दी, तथा उत्तर मध्युगीन 12वी –18वी शताब्दी, दो भागों में बाँटा गया है। 12वी शताब्दी से लेकर 18वी शताब्दी, तक की अवधि को मुगल काल प्रारंभिक आधुनिक काल गत मध्ययुगीन काल के नामों से जाना जाता है।

मुहम्मद गौरी को भारत का प्रथम मुस्लिम शासक माना जाता है। सन् 1192 में तराईन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराकर गौरी ने भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना की।

1192 सन् से लेकर मुगल साम्राज्य की स्थापना तक के लगभग 300 वर्षो के दौरान मुहम्मद गौरी 1192–1206), कुतुबुद्दीन ऐबक(1206–1210), इल्तुत्मिस (1210–1236), रजिया बेगम(1236–1240), बहराम्शाह (1240–1242),मसुद्शाह(1242–1246), नसरुद्दीन (1246–1265), गयासुद्दीन बलबन (1265–1287), जलालुद्दीन (1290–1296), अलाउद्दीन (1296–1316), गयासुद्दीन तुगलक (1320–1325), मुहम्मद तुगलक (1325–1351), फिरोजशाह तुगलक (1351–1388), बहलोल लोदी (1451–1489), सिकंदर लोदी (1489–1517), इब्राहीम लोदी (1517–1526) आदि शासको ने भारत में शासन किया। सन् 1526 से बाबर के आधिपत्य के फलस्वरूप भारत में मुगल साम्राज्य का एक नया युग प्रारंभ हुआ, जो लगभग 300 वर्षो तक चला। बाबर के उपरांत हुमायूँ (1530–1540 व 1555–1556), अकबर (1556–1605), जहाँगीर (1605–1627), शाहजहाँ (1627–1658), औरंगजेब (1658–1707) आदि मुगल बादशाहों ने भारत के शासन की बागडोर संभाली।

मुस्लिम शासक अपने साथ एक नवीन संस्कृति, धर्म तथा आदर्श लाये तथा अपने शासन को दृढ़ करने के लिए उन्होंने स्वयं को मुस्लिम धर्म तथा इस्लामी ज्ञान व संस्कृति का प्रचार करने के लिए समर्पित कर दिया।

प्रायः सभी मुस्लिम शासक शिक्षित थे तथा सभी ने विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। सभी मुस्लिम शासको के द्वारा किये गए प्रयासों के परिणाम स्वरुप भारत देश में एक नवीन प्रकार की शिक्षा व्यवस्था अर्थात इस्लामी शिक्षा की धारा प्रवाहित होने लगी थी।

इस्लाम क्या हैं द्य =झ एक अल्लाह (ईश्वर) में यकीन रखना इस्लाम है। इस शब्द की उत्त्पत्ति 'सलाम' के मूल अक्षरों (सीन)(लाम) तथा (मीम) से हुई है।

इस्लाम शब्द का साहित्य अर्थ "आत्म समर्पण तथा सुरक्षा, मुसलमान ऐसी सख्सियत होती है, जो खुद को अल्लाह की इबादत के लिए पेश करता है। इसलिए वहसब जो अल्लाह के एक होने के मूल संदेश पर यकीन रखते है, मुसलमान कहलाये। इनमे तमाम नबी, आदम, नुह, मूसा, व ईसा, से लेकर मुहम्मद तक शामिल है। इस्लाम मानव जाति के लिए रहम (करुणा) बनकर आया वह मार्गदर्शन की एक पुस्तक के रूप में आया, जिसकों अल्लाह का शब्द "कुरान" कहते है। यह 1400 पूर्व प्रकट हुआ और आज तक बगैर किसी तबदीली (परिवर्तन) के मौजूद है द्य यह किताब आखरी नबी मुहम्मद की शिक्षाओं के साथ दर्शाती है, की स्पष्टता के आदेशनुसार समस्त मानव जीवन के हर आयाम में चाहे जैसा की एक ईमारत की बनावट और पयेदारी (स्थिरता) के लिए स्तम्भ जरुरी है, उसी प्रकार प्रत्येक मुसलमान के लिए इस्लाम धर्म में पांच सुतून (स्तम्भ) महत्पूर्ण है। यह स्तम्भ मनुष्य के ईमान को मजबूती देते है और मुसलमानों को आपस में भाई–चारे में बांधे रहते है।

पहला स्तम्भ आस्था (इमान) की गवाही, दूसरा स्तम्भ प्रार्थना (नमाज), तीसरा अनिवार्य दान (जकात) चौथा उपवास (रोजाध्सोम) और पांचवा तीर्थ–माता (हज)।

भारतीय गणतंत्र में हिन्दू धर्म के बाद इस्लाम दूसरा सर्वाधिक प्रचलित धर्म है, जो देश की जनसंख्या का 14.2 : है (जनगणना 2011 के अनुसार 17.2 करोड़ है) भारत में मुसलमनो की तीसरी सबसे बड़ी आबादी है। (इंडोनेशिया और पाकिस्तान के बाद)।

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में मुसलमानों की कुल जनसँख्या सर्वाधिक संकेन्द्रण 47 : है –जो तीन राज्य में निवास करते है।

उत्तरप्रदेश (3.07 करोड़) 19.3 :पश्चिम बंगाल (2.02 करोड़) 25 :बिहार (1.37 करोड़) 16.4 :मुसलमानों की उच्च संख्या असम (31 :), पश्चिम बंगाल (25.5 :), दक्षिण राज्य केरल में (24.7 :) पाई जाती है।

भारत में इस्लाम धर्म का आगमन लगभग 7वीं शताब्दी (सन् 629 ई०) में हुआ था और तब से यह भारत के संस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक अभिन्न अंग बन गया है। कई वर्षो से संपूर्ण भारत में हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों का एक अद्भूत मिलन होता चला आ रहा है और भारत के आर्थिक उदय और सांस्कृतिक प्रभुत्व में इस्लाम धर्म के लोगों ने अपना समय–समय पर अविस्मरणीय योगदान देते रहे है। भारत के प्रथम नागरिक तथा राष्ट्राध्यक्ष के रूप में अब तक तीन मुस्लिम राष्ट्रपति हुए– डॉ0 जाकिर हुसैन, डॉ0 अहमद फक्रुद्दीन अली और मिसाइल मैन के नाम से ख्याति प्राप्ति डॉ0 ए० पी० जे० अब्दुल कलाम। उपराष्ट्रपति–मोहम्मद हामिद अंसारी। मुस्लिम समुदाय के द्वारा अपनी धार्मिक एवं भाषाई तथा सांस्कृतिक विरासतों को अक्षुण बनाये रखने के लिए तथा इस्लाम धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु अल्पसंख्यक शिक्षा का सहारा लिया । मुस्लिम समुदाय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा दो रूपों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

में दी जाती है – **पहला–** मकतबी शिक्षा एवं दूसरा . मदरसा शिक्षा

मकतबी शिक्षा– किसी भी शैक्षिक व्यवस्था में बालक के प्रारंभिक शैक्षिक व्यवस्था को स्तम्भ को आधार कहा जाता है। इस– दृष्टिकोण से मकतबी शिक्षा मुस्लिम कालीन शिक्षा व्यवस्था की शिक्षा का आधार स्तम्भ है, जो बालक को सर्वप्रथम शैक्षिक मानको से जुड़ने का सुअवसर प्रदान करती है। मकतब शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के "कुतुब" शब्द से हुई है – जिसका अर्थ है – लिखना। अतः मकतब वह स्थान हुआ, जहाँ बालकों लिखना सिखाया जाता है। इसमें प्रवेश की उम्र सीमा 4 वर्ष 4 माह 4 दिन होता था, के द्वारा होता था। इसमें मुख्य रूप से बालक को अपने धर्म की शिक्षा के साथ–साथ लिखना, पढ़ना तथा सामान्य अंक गणित की शिक्षा दी जाती है तथा इसकी लिपि फारसी है। इसके अलावा कुछ मनोरंजक साहित्य जैसे की लैला–मजनू . युसूफ–जुलेखा आदि की कहानियां भी सुनायी जाती है।

मदरसा शिक्षा – मदरसा शब्द अरबी भाषा के 'मदरसाह' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है .वह स्थान जहाँ पर शिक्षण –अधिगम की प्रक्रिया सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित रूप से संचालित होती है द्य मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था मे मकतवी शिक्षा पूर्ण कर लेने के पश्चात् –बालक को वास्तविक अर्थपूर्ण एवं उच्च शिक्षा के लिए मदरसा में प्रवेश लेना पड़ता है। यह मुस्लिम समुदाय की उच्च शिक्षा प्रणाली है।जिसमे बालक को धार्मिक, चारित्रिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं नैतिक गुणों का परिमार्जन किया जाता है । मदरसों में भिन्न –भिन्न विषयों के विद्वान् अध्यापक (मोदर्रिसध असातजा) नियमित रूप से अध्यापन कार्य करते थे द्यमदरसों का प्रबंध प्रायः व्यक्तिगत प्रबंध समितियों अथवा मुस्लिम समाज के धनी व सम्मानित नागरिकों के द्वारा किया जाता था। मुस्लिम काल में आगरा,दिल्ली, जौनपुर, बीदर, मालवा, लाहौर, गोलकुंडा, मुल्तान, रामपुर, लखनऊ, देवबंद, फिरोजाबाद, अजमेर, अहमदनगर, बीजापुर आदि स्थान शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे।

मुस्लिम काल की शिक्षा की विशेषताएँ –

– इस्लाम धर्म का प्रचार–प्रसार करना ।
– इस्लामी संस्कृति का प्रचार–प्रसार करना ।
– मुसलमानों में ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना ।
– मुस्लिम शासन को सु.ढ़ करना ।
– सांसारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति ।

मुस्लिम काल में उच्च शिक्षा का माध्यम अरबी भाषा थी तथा सभ्य समाज मे फारसी बोलने का प्रचलन था। चौदहवीं शताब्दी मे अरबी, फारसी तथा हिंदी के सम्मिश्रण से मुगल सैनिक शिविरों मे एक नई भाषा उर्दू की उत्पति हुई। आईने अकबरी तथा अकबर नामा इस काल के प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ है। महाकवि तुलसीदास की रामचरित मानस जैसी कालजई रचना भी मुगल काल की देन है। पाठ्यक्रम के संबंध मे इस काल मे मकतबी शिक्षा और मदरसा शिक्षा दो रूपों मे दी जाती थी। मकतबी शिक्षा के अंतर्गत पाठ्यक्रम मे छात्रों को लिखना, पढ़ना, साधारण अंकगणित, पत्रव्यवहार, अर्जी निवासी, अरबी–फारसी की शिक्षा के साथ–साथ कुरान की शिक्षा दी जाति थी।मदरसों मे उच्च शिक्षा के संपूर्ण पाठ्यक्रम को दो भागो मे बांटकर –लौकिक तथा धार्मिक। लौकिक शिक्षा के अंतर्गत अरबी, व्याकरण, गद्य साहित्य, तर्क शास्त्र, दर्शनशास्त्र, गणित, इतिहास, भूगोल, आदि विषय की शिक्षा दी जाति थी। ध ाार्मिक के अंतर्गत कुरान, हदीस तथा फिकाह (धर्मशास्त्र) की शिक्षा दी जाती थी।

शिक्षण विधि के संबंध मे इस काल मे शिक्षा मुख्यतः मौखिक दी जाती थी तथा रटंत स्मरण पर अधिक बल दिया जाता था। मौखिक, प्रश्नोतर वाद–विवाद, मानिटर प्रणाली इस काल की प्रमुख शिक्षण विद्धि थी ।

शिक्षक (मोदर्रिसध्असातजा) एवं छात्र(सागिर्दध तालिब–ए–इल्म) के संबंध के विषय मे कहा जाता है' पिता एवं पुत्र के जैसा घनिष्ठ संबंध होता था।शिक्षको की विद्वता अत्यंत उच्च कोटि की होती थी। मदरसों में छात्र वास होने से छात्र वही रहते थे, जिससे शिक्षक एवं छात्र के संबंध अत्यधिक घनिष्ठ एवं मधुर संबंध थेद्य परन्तु मुस्लिम काल के अंतिम वर्षों मे शिक्षक–छात्र संबंधों की घनिष्ठता तथा गुरु के आदर्श लुप्त होने लगे थे। अनुशासनहीनता –दृष्टिगोचर होने लगी थी। औरंगजेब ने भरे दरबार में अपने अध्यापक शाहसा लेह का अपमान किया था। इस काल की शिक्षा के समय कोई औपचारिक परीक्षा प्रणाली नही विकसित हुई थी शिक्षक के द्वारा छात्रों में ज्ञान को पर्याप्त समझने पर शिक्षा समाप्त समझी जाती थी। साहित्य में छात्रों को 'कामिल' धार्मिक शिक्षा के छात्रों को 'आलिम' तथा तर्क व दर्शन के छात्रों को फाजिल की उपाधि दी जाती थी। इस काल में छात्र अत्यधिक अनुशासित रहते थे। नैतिक व व्यावहारिक शिष्टाचार, विनम्रशीलता तथा आत्मनुशासन सभी छात्रों के लिए अनिवार्य था।

पर्दा प्रथा होने के कारण उस समय नारी शिक्षा का विकास काफी कम हुआ था। कम आयु के लडकियाँ मकतबों में जाकर प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण कर लेती थी, परन्तु उच्च शिक्षा के लिए घर पर ही व्यवस्था करनी होती थी, इसलिए उच्च शिक्षा केवल शाही तथा अमीर घरानों तक ही सीमित थी ।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

उद्देश्य – मध्यकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था का वर्त्तमान मे प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।

सीमांकन– प्रस्तुत शोध पेपर में मध्यकालीन भारत मे केवल मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन किया गया है ।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध अध्ययन को ऐतिहासिक विधि के अंतर्गत दार्शनिक विधि से किया गया है और आकड़ॉ संग्रह हेतु प्राथमिक एवं गौण स्रोतों का अध्ययन किया गया है। गौण स्रोतों के अंतर्गत इस्लाम धर्म से सम्बंधित किताबों का अध्ययन किया गया है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन– इस शोध समस्या से सम्बंधित अनेक साहित्य का अध्ययन किया गया, जिसमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित है –

A Attitude of educated Muslim women of marathwada pegion toworolp women empowerment……-a study- और पाया की जो मुस्लिम महिला डिग्री धारक है, वो महिला सशक्तिकरण में पूर्ण रूप से अपना योगदान दे रही है ।

2 अहमद 1978 ने अपने अध्ययन'' [system of education in medival india] ''में पाया की मुगलकाल मे बालक एवं बालिकायें दोनों मकतब में शिक्षा प्राप्त करने जाते थे। परन्तु लडकों की तुलना में लड़कीयों की संख्या काफी कम थी।

3 भारत सरकार की रिपोर्ट 1947 ."The national committee on status of women in India ." के अनुसार भारत वर्ष मे लड़कों की शिक्षा के मुकाबले लड़कियों की शिक्षा का प्रतिशत शिक्षा के सभी स्तरों पर काफी कम है। स्त्रियों की अशिक्षा के लिए जिम्मेदार तत्वों में मुस्लिम समुदाय मे विशेषकर पर्दा प्रथा तथा सभी समुदायों मे निर्धनता, अशिक्षा एवं अस्पृश्यता है।

4 रहीम दशाहिद – मदरसा शिक्षा पद्धति Article - अध्ययन किया और पाया की दान की उम्मीद पर टिका है इसका भविष्य।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात हुआ की मध्यकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में कुछ ऐसी विशेषताए दृष्टिगोचर होती है, जिनका समावेश यदि वर्ततमान शिक्षा व्यवस्था में किया जाये तो वास्तव में समाज को लाभ प्राप्त होगा। धार्मिक व सांसारिक शिक्षा का संबध समन्वय, शिक्षक एवं छात्र के मधुर संबध चरित्र निर्माण पर बल, व्यवासिक शिक्षा के प्रशिक्षण पर बल आदि पक्षों को वर्त्तमान शिक्षा में समाहित करके आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को उपयोगी बनाया जा सकता है। इस सबसे शिक्षा के व्यवहारिक रूप में परिवर्तन हो सकता है तथा वर्ततमान की अनेक शिक्षा समस्या के समाधान का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। इसके साथ–साथ तब ही शिक्षा समाज की आवश्कयता की पूर्ति कर सकने में समर्थ सिद्ध हो सकती है। मुस्लिम शिक्षा में शिक्षा के द्वारा सांसारिक वैभव की प्राप्ति पर बल दिया जाता था। शिक्षा का यह उद्देश आज भी पूर्णतः प्रासंगिक प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आशीर्वादी, लाल श्रीवास्तव (1 रंद 2017)'मध्य कालीन भारतीय संस्कृति' शिवलाल अग्रवाल एंडकम्पनी ।
2. आशीर्वादी, लाल श्रीवास्तव 'दिल्ली सल्तनत' शिवलाल एंड कम्पनी।
3. अबू खालिद, जावेद अहमद, अब्दुल हक, 'इस्लाम की विशेषताएँ' इस्लामी आमंत्रण एवं निर्देश कार्यालय सुल्तानाह रियाज सऊदी अरब।
4. गुप्ता, एस० पी०, व गुप्ता अलका (2019) 'भारतीय शिक्षा का इतिहास,विकास एवं समस्याएं' शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
5. पाण्डे एस० के० – 'मध्यकालीन भारत', एक शोध परक नवीन प्रस्तुती प्रयाग एकेडमी 4 बंद रोड (एलनगंज) इलाहाबाद।

*****